Hindi text of Bani n Asirbachan
of
Shri Thakur Keshavchandra Ji
As in uploaded video of
Charam Chaitanya Maha Yagna-2015

दुनिया में बहुत सारे जपी, तपस्वी, मुनी हैं। वह सब बहुत कुछ बताते हैं। उसमें बाणी (बोलना), मणी (सोचना), सुनी (सुनना), ठाणी (वासत्विक सच्चाई नहीं है), सिर्फ उच्चारण है। उसमें आचरण नहीं है। जैसे : आप मेरे सामने प्रतिज्ञा लेते हो कि झूठ नहीं बोलेंगे, जब वहां से दूसरी जगह चले जाते हो तब फिर वही पूर्ववत प्रकृति 'हिंसा, चोरी, नारी, द्वेष आदि'। दोंनो जगह में फर्क क्या है। ठाकुर जी के सामने 'हिंसा, चोरी, नारी, द्वेष आदि' नहीं, और दूसरी जगह है। स्थान का क्या महत्तव है? इसलिए हमें बार-बार नाम जप करना चाहिए। नाम जप करने के बाद वह मानस में जा कर दुषप्रवृति को नाश करता है। इसलिए **जब तक** मानस जाप नहीं कर रहे, **तब तक** हमारे अंदर से इर्ष्या, द्वेष खत्म नहीं होता।

हमारी शक्ति मुताबिक भगवान कुछ न कुछ दिए हैं, उसी हिसाब से हम जन्म लेतें हैं, और उसी हिसाब से क्रिया (काम) करते हैं। वह ऐसा क्यों किए हैं? हमारे बीच में कोई चोर होता है, पकड़ा जाता है, और कोई पुलिस होता है। **यह सब नाम जप का फल है।**

हमारे अन्दर नाम का फल, गुण का फल..... ज्यादा होगा तब जाकर **चैतन्य पुरूष के पास पहुंच पाएगें।**

हम बात कैसे करते हैं। कुछ सुनते है, सुनने के बाद दिमाग में आता है, फिर छन्न कर मुख से निकलता है। हम बहुत गंदा बात करते हैं, गाली देते हैं, इसलिए चैतन्य नाम बहुत बार लेने से वह दिमाग में मंत्र होकर, अच्छा चरित्र निकलता है। उससे **हम गुरू का अनुभव करते हैं।**